IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बावड़ी : सुविधायुक्त एवं कलात्मक जल स्रोत

(मेड़तनी बावड़ी झुंझुनू के विशेष संदर्भ में)

रोहिताश कुमार

सहायक आचार्य, राजकीय महिला महाविद्यालय, झुंझुनू

डॉ. नीकी चतुर्वेदी

सहआचार्य, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सार–संक्षेप

यह शोध पत्र झुंझुनू जिले की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर, विशेष रूप से बावड़ियों के महत्व को उजागर करता है। झुंझुनू, जो शेखावाटी क्षेत्र में स्थित है, अपने बलिदान, त्याग और तप की गौरवशाली परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। इस जिले में कई प्राचीन बावड़ियाँ हैं, जिनका निर्माण जल संरक्षण और धार्मिक–सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया था।

शोध में विशेष रूप से मेड़तनी बावड़ी का विस्तृत अध्ययन किया गया है, जिसे झुंझुनू के तत्कालीन शासक शार्दूल सिंह की पत्नी मेड़तनी जी ने बनवाया था। यह बावड़ी अपने उत्कृष्ट वास्तुशिल्प, जल संरक्षण तकनीकों और ऐतिहासिक महत्व के कारण प्रसिद्ध है। बावड़ियों की स्थापत्य शैली, जल प्रबंधन प्रणाली और इनके सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व का भी इस शोध में विश्लेषण किया गया है।

वर्तमान में, इन बावड़ियों की उपेक्षा के कारण वे जीर्ण–शीर्ण अवस्था में हैं। अतः इनके संरक्षण एवं पुनरुद्धार की आवश्यकता है ताकि इन्हें जल स्रोत और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में पुनः स्थापित किया जा सके। इस अध्ययन का उद्देश्य बावड़ियों की ऐतिहासिक, स्थापत्य और सामाजिक भूमिका को समझना तथा उनके संरक्षण के लिए जागरूकता बढ़ाना है।

मुख्य शब्द: शेखावाटी, जल संरक्षण, मेड़तनी बावड़ी, स्थापत्य कला, जल प्रबंधन, सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक जल संरचनाएं, पुनरुद्धार।

प्रस्तावना

शेखावाटी क्षेत्र की बालू रेत के टीलों और एक तरफ से पहाड़ों से घिरा हुआ झुंझुनू जिला है। झुंझुनू का इतिहास बलिदान, त्याग और तप का साक्षी है[1]। इसके कण–कण में अनगिनत शहीदों की अमर ज्योत जगमगा रही है। इसके संत और सूफी प्रेम के प्रतीक, छतरियां, मकबरे, तालाब, कुएं, बावड़ी जीवंत उपदेश, कुटियाएं उपासना केन्द्र,बगीचियां साधना स्थल, मुनी ब्रह्म ज्ञानी, निवासी शांति के दुत ,हवाएं दुःख निवारक, वातावरण मन भावन और धरती ममता की कोख है।

पुराने समय से ही मानव बस्तियां पानी के स्रोतों के पास बसी हैं[2]जहां–जहां पानी था वहां मनुष्य ने रहना शुरू किया क्योंकि पानी मानव के जीवन के लिए आवश्यक है जैसे–जैसे विकास होता गया। मनुष्य को पानी के प्राकृतिक स्रोतों से दूर रहना पड़ा। इस स्थिति में उन्हें वर्षा के सतही जल को सुरक्षित करने की आवश्यकता महसूस हुई । इसके साथ ही भूजल का भी उपयोग करने की जिज्ञासा हुई, जिसके फल स्वरुप उन्होंने विभिन्न जल स्रोतों का निर्माण किया । जिसमें उन्हें प्रकृति ने भी सहयोग प्रदान किया। वर्षा के जल को सतही संरचना तालाब ,झील, कुंड आदि के द्वारा इकट्ठा किया गया व यही जल धीरे–धीरे भूजल को भी बढ़ाने का कार्य करने लगा[3]। जिन स्थलों पर प्राकृतिक संरचनाओं कम थी उन स्थानों पर कुएँ और बावड़ियों का निर्माण करना शुरू हुआ । राजस्थान मे झुंझुनू भी एक ऐसा क्षेत्र है जहां पर वर्षा कम होती है अतः यहां पर भूजल का उपयोग आवश्यक हो जाता है। राजस्थान को जांगल प्रदेश कहां जाता है [4]। जहां पानी का अभाव रहता है। अभाव के बीच जीवन को बचाने के लिए वर्षा के जल का अधिकतम उपयोग और भूमिगत जल का प्रयोग राजस्थान में किया गया। विशेष कर राजस्थान के उत्तर व पश्चिमी क्षेत्र जहां रेगिस्तान का विस्तार है इस कार्य को किया गया। अपराजित पृच्छा मैं विश्वकर्मा के मुंह से कहलाया गया है कि प्रत्येक नगर के बाहर और अंदर की ओर विभिन्न प्रकार के जलाशयों की व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि जल से ही जीवन है ऐसे में बावड़ी , कुप, तालाब, कुंडों का निर्माण हुआ। इसके साथ ही विष्णु धर्मोत्तर पुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति जल स्रोतों का निर्माण करवाता है उसे स्वर्ग प्राप्त होता है इन शास्त्रों ने धार्मिक लोगों को जल स्रोतों के निर्माण के लिए प्रेरित किया [5] ।

बावड़ी

भावप्रकाश में बावड़ी के संबंध में कहा गया है कि जो कुआं पत्थर तथा ईंटों से बना हुआ हो तथा बहुत बड़ा हो तथा जिसमें उतारने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हो तो उसे वापी या बावड़ी कहा जाता है उसके जल को वाप्य कहा जाता है (भावप्रकाश निघण्टु मिश्रप्रकरण 13,46) बावड़ी का जल यदि खारा हो तो पितकारक होता है कफ और वात को दूर करने वाला होता है और यदि वह मीठा हो तो कफकारक और वात तथा पीत का नाशक होता है[6]। (भावप्रकाश निघण्टु मिश्रप्रकरण 13,47)पगबाव यह कम गहरे कुएं हैं जिनमें सीढ़िओ के माध्यम से उतरा जा सकता है और उनके पानी का उपयोग किया जाता था मुख्यतः नदी किनारे व पहाड़ियों में जल स्रोतों के पास पाए जाते हैं। इन्हीं का विस्तृत रूप बावड़िया बनी[7]। बावड़ी को अमरसिंह ने दीर्घिका कहा है। (अमरकोष 1, 10, 28) इसके लिए वाप्या, वापी,वारिणी जैसे शब्द आए हैं[8]।

बावड़ियों का उद्भव

कुछ विद्वानों की यह मान्यता है कि बावड़ियां भारत में शकों की देन है। पहली सदी ईसापूर्व जब उनका भारत में आना हुआ, वे अपने साथ वापी निर्माण की विधियों को भी लेकर आए थे; उनका प्रसार क्षेत्र पश्चिमी भारत अधिक रहा, अतः इसी क्षेत्र में बावड़ियों का निर्माण अधिक मिलता है। बावड़ियों के पर्याय के रूप में 'शकन्धु' शब्द शकों के साथ संबंध को प्रकट करने वाला है। इसी प्रकार 'कर्कन्धु' भी वापी का पर्याय है। 'हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन' में प्रो. वासुदेवशरण अग्रवाल ने इन दोनों ही शब्दों को व्याकरण में सुरक्षित बताते हुए इनका संबंध ईरान के दक्षिण–पश्चिम में स्थित कर्क देश और शकों के साथ स्थापित किया है[9]। किंतु, वर्ष 2000 में जब धोलावीरा–गुजरात में पुरातत्त्ववेत्ताओं ने उत्खनन किया तो उसमें जल–स्थापत्य वाली ऐसी संरचनाएं मिली हैंऔर उनमें जलस्तर तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां भी बनी हुई है। अतः शकों के साथ वापी स्थापत्य विधि का भारत आगमन स्वीकार करना अनुचित ही लगता है। यह विधि मूलतः भारतीयों की ही देन प्रतीत होती है।

राजस्थान (झुंझुनू) में बावड़ी निर्माण

राजस्थान में बावड़ियों का निर्माण विभिन्न राजाओं , सामंतों,बंजारो, व्यापारी व सामान्य जनों द्वारा किया गया है, जो उनकी वास्तुकला और जल प्रबंधन की क्षमता को दर्शाता है। झुंझुनू में अनेक बावड़ियों का निर्माण शासको व महाजन वर्ग द्वारा किया गया ।जिनमें मेड़तनी बावड़ी ,जसरापुर की बावड़ी, खेतानो की बावड़ी ,लोहार्गल में चेतन दास की बावड़ी । इन बावड़ियों से पीने का पानी ,पशुओं के लिए पानी यात्रियों के रहने का स्थान वह पेयजल उपलब्ध होता था। वर्तमान में यह बावड़िया रखरखाव के अभाव में असामाजिक तत्वों के अड्डे बनी हुई है वह इनमें कूड़ा करकट डाला जा रहा है। जिससे इनका मूल उद्देश्य पूरा नहीं हो रहा है[10]।

बावड़ियों के प्रकार

अपराजित पृच्छा और राजबल्लभ में बताया गया है कि बावड़िया चार प्रकार की होती हैं नंदा ,भद्रा, जया विजया इनमें से नंदा बावड़ी एक मुखी होती है और तीन ओर से कूट अथार्थ बंद होती है भद्रा नामक बावड़ी के दो और प्रवेश द्वार होते हैं उनमें दो ओर से आवागमन होता है और 6 ओर से बंद होती है तीन ओर से आवागमन वाली बावड़ी को जया कहते हैं और इसमें 9 कोने होते हैं सबसे श्रेष्ठ बावड़ी विजया बावड़ी होती है जिसमें चार प्रवेश द्वार होते हैं और बारह कोने या कूट का निर्माण होता है[11]।

एक दूसरा विभाजन निम्न प्रकार है:– साधारण बावड़ी जिसमे सीढ़ियों के साथ एक कुआं होता है। विशाल बावड़ी में कुआं और सीढ़ियों के साथ साथ कमरे,प्रवेश मार्ग, झरोखे आदि भी होतें है।सजावटी बावड़ी में सीढ़ियों के साथ सजावटी पत्थरों और मूर्तियों का उपयोग किया जाता है।

बावड़ियों का सांस्कृतिक महत्व

बावड़ी इहलोक में परलोक सुधारने का साधन थी। कहते है कि एक बावड़ी खुदवाना सौ योग्य पुत्रों को जन्म देने के बराबर पुण्य देता है। बावड़ी का निर्माण व जीर्णोद्धार मन्दिर निर्माण तथा यज्ञादि के समान पुण्यदायी माना गया है[12]। कवी माघ ने एक श्लोक में उन जल स्रोतों के लिए तीर्थ शब्द का प्रयोग किया है जहां पर सीढ़ियां हो।

आवासीय स्थलों पर बावड़ी का स्थान: वराह मिहिर (वृहत संहिता 54,97 98) में बताया गया है कि गांव अथवा नगर के अग्नि कोण में यदि कुआ या बावड़ी है तो वह अच्छी नहीं होती है मानव बस्ती के पूर्व, पश्चिम, उत्तर व उत्तर पूर्व में ही बावड़ी व कुएँ का निर्माण शुभ माना जाता है[13]।

वापियों की स्थापत्य कला

जलस्रोतों में बावड़ियों का अपना विशिष्ट स्थापत्य वैभव दिखाई देता है। पहाड़ी अंचलों में जहां लगातार वर्षा और पानी के निरंतर बहाव के कारण पत्थरों, प्लास्टर (सुधालेप या वज्रलेप) तथा गार (मिट्टी के जमावदार उपयोग) को चिरस्थायी नहीं माना गया है, वहां कूप खनन के दौरान ही शिखर से तल तक मिट्टी को कुछ इस तरह रखा और सुरक्षित किया जाता है कि वह वापीवत् रचना वाला हो जाए। उसमें उतरने की संभावना क्षीण नहीं हो। ऐसी बावड़ी गोलाकार पद पंक्तियों वाली होती है जिसमें दीवार के साथ–साथ ही पगतिये या सीढ़ियां तैयार की जाती हैं। कई बार इन पगतियों को पाषाण जड़कर स्थायित्व प्रदान कर दिया जाता है और इनकी रचना इसलिए की जाती है कि भूमि खनन के लिए सीढियों से उतरने और मलबा निकालने में सहुलियत रहे। कम क्षेत्र होने पर इस विधि का प्रयोग किया जाता है[14]।

अधिक क्षेत्र होने पर कूप स्थल से बहुत आगे संभवतः पूर्व दिशा की ओर से भी मिट्टी की खुदाई आरंभ की जाती है ताकि कूप के लिए की गई खुदाई से निकलने वाली मिट्टी, पत्थर चूर्ण, मलबे को बाहर निकालकर आसानी से तल पर जमा किया जा सके। ऐसे में स्वतः वापी की रचना होती जाती है। यह एक मुखी वापी होती है जिसे शास्त्रों में 'नन्दा' नाम दिया गया है। मेड़तनी बावड़ी भी इसी श्रेणी की बावड़ी है।

शास्त्रों में बावड़ी निर्माण का विधान है। बावड़ी की खुदाई के लिए विशेषज्ञों की सहायता ली जाती थी। ये विशेषज्ञ अपने अनुभव और ज्ञान से बताते थे कि किस स्थान पर जल मीठा है, कहाँ पर पानी की सीरें मौजूद हैं, और किस स्थान पर कुँआ और बावड़ी खुदवाना वास्तुनुसार उचित है।

इन विशेषज्ञों को विभिन्न नामों से जाना जाता था, जैसे कि:– पानी वाले महाराज, बुजागर, पुजारी, हरवा (मेवाड़ में)[15]।

इन विशेषज्ञों से कुँए और बावड़ी के स्थान चयन के लिए परामर्श लिया जाता था। वे अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर बताते थे कि कोनसा स्थान पर जल संचयन के लिए उपयुक्त है।

बावड़ी की सुंदरता में पाद सोपान, सीढ़ियों और स्तम्भों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।वापी के आकार के आधार पर सीढ़ियों का निर्माण किया जाता है, जैसे कि गोल वापी में घुमावदार सीढ़ियाँ और चौकोर वापी में सीधी सीढ़ियाँ।चारों तरफ देव मूर्तियों लगाने के स्थान रखे जाते हैं।बावड़ी का कुण्ड आयताकार, वर्गाकार या अष्ट भुजाकार होता है।

सीढ़ियों का निर्माण इस तरह किया जाता है कि जल स्तर के घटते बढ़ते रहने पर भी जल के उपयोग में बाधा न हो और पशु तथा महिलाएँ भी सुविधाजनक रूप से जल का उपयोग कर सकें। बावड़ी निर्माण का एक और उद्देश्य पीने के पानी को पशुओं की सीधी पहुँच तक लाना भी रहा है[16]। कुछ बावड़ियों में उतरने की सीढ़ियों भूमितल से पानी के तल तक सीधे न हो कर घूम कर होती थी ताकि सूर्य का प्रकाश बावड़ी में सीधे न जा सके और जल का वाष्पीकरण भी कम से कम हो।

बावड़ियों में बरसात के पानी के बहकर आने के मार्ग भी बनाए जाते हैं ताकि बावडियों बारिश के पानी से रिचार्ज हो सकें।

बावड़ी को निम्न भागों में विभाजित जाता है–

1.सोपान : कूप या जलस्तर तक पहुंचने के लिए पाषाण पंक्तियां।

2. कूट : पंक्तियों और कूप के बीच अधर में बनने वाली वितानमय रचना।

3. छत्री : बावड़ी के ऊपर बनने वाली सौंदर्यस्पद छत्रियां, इनकी संख्या चार या न्यूनाधिक हो सकती है।

4. दाबड़ा : वापी के शिखर पर जलयंत्र को धारण करने वाली रचना, जहां से जल नालियों में बहना आरंभ करता है। इसको गवाक्ष की तरह खड़ा पाषाण का आधार देकर बनाया जाता है।

5. गौमुखा या मकरमुखा : दाबड़े के पास से नीचे गिरने वाली जलराशि इस रचना से गिराई जाती है। इनने गिरने वाली जल राशि पवित्र और गंगाजल तुल्य मानी जाती है।

6. खेल : बावड़ी के पार्श्व में बना जल का हौद जहां पशु–पक्षी अपनी प्यास बुझाते हैं।

बावड़ियों के सौंदर्य की दृष्टि से शिल्पाकृतियां बनाई जाती है। इनमें मुख्यरूप से कीचक मुख, कीर्तिमुख, काण्डवारिणी, कपोताली, गोखें, तोरण, जलान्तर या वार्यान्तर, गजपंक्ति या अश्वपंक्ति, देवपंक्ति, नरपंक्ति इत्यादि। मन्दिर–सी रचना के लिए बाहरी और भीतरी दीवारों पर प्रकोष्ठ बनाए जाते हैं जिनमें भैरव, विनायक, जलशायी विष्णु और उनके विविध अवतार, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, सूर्य, चंद्र, महिषासुर मर्दिनी, शिव और उनके विविध रूप, ब्रह्मा, विश्वकर्मा इत्यादि की मूर्तियां जड़ी जाती है।ये आयुध, वादन, अनुचर गणादि से संपन्न होती है। वापी के कूट के स्तर विष्णुकांत, रुद्रकांत और ब्रह्माकांत जैसी षट्, अष्ट, षोडशास्त्र रचना से संपन्न होते हैं और सौंदर्य के लिए उन पर कंगूरे, मालाएं, मुक्तावली, कलश–सुराही आदि भी उकेरे जाते हैं। वापी कई बार एक कमनीय रमणी–सी सौंदर्य से लकदक नजर आती है और दर्शक को चमत्कृत कर देती है ।

बावड़ी के कक्षो का उपयोग

बावड़ियों में अनेक मंजिलों के कक्ष बनाए जाते थे, जिनका उपयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जाता था, जैसे कि आरामगृह, धार्मिक व राजनैतिक परिचर्चा व विचार विमर्श, विश्राम हेतु उपयोगी स्थान, विशेषकर ग्रीष्म ऋतु में इन कक्षों में बावड़ी का जल शीतलता प्रदान करता था, जिससे वे विश्राम हेतु उपयोगी होते थी और धर्मशाला का भी कार्य करती थी।

मेड़तनी बावड़ी, झुंझुनू (स्थिति, इतिहास, स्थापत्य, उपयोगिता)

झुंझुनू शहर के उत्तर में एक पहाड़ी स्थित है पहाड़ी की तलहटी के पास शानदार बावड़ी जिसको मेड़तनी बावड़ी के नाम से जाना जाता है । इस बावड़ी तक पहुंचने के लिए रानी सती मंदिर मार्ग व पिपली चौक से रास्ता आता है । वर्तमान में यह बावड़ी पर्यटन विभाग के पास है इस समय पर्यटन विभाग ने यहां पर अपना कर्मचारी भी लगा रखा है । यह बावड़ी उत्तरी अक्षांश 28 °13’ व पूर्वी देशांतर 75 °39’ पर स्थित है

झुंझुनू के शासक शार्दुल सिंह जी ने अपनी तीन शादियां की। इनमें से एक पोनुना (नागौर) के मेड़तियों के यहाँ बख्त कंवर जी से शादी की। शार्दुल सिंह जी की यह ठकुरानी अपने पीहर की वजह से मेड़तनीजी के नाम से प्रसिद्ध हुई। झुंझुनू के अधिपति शार्दूल सिंह जी का देहान्त जेठ बदी एक सम्बत 1800 में हुआ। मेड़तनी जी ने अपने पति के स्वर्गवास होने के बाद झुंझुनूं में उत्तर की तरफ पीपली चौक और मंशा देवी मन्दिर के बीच में एक बावड़ी बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा सम्वत् 1840 में कराई[17]। (शेखावाटी प्रकाश) और इस बावड़ी का नाम रखा गया मेड़तनी बावड़ी यह बावड़ी कई वर्षों में बनकर तैयार हुई।

मेड़तनी बावड़ी (भूत बावड़ी)

इस बावड़ी का मुख्य दरवाजा पूरब दिशा की तरफ है इस बावड़ी में उतरने के लिए सीढ़ियां बनाई गई हैं बावड़ी जगह–जगह से टूटी अवस्था में है इस विशाल बावड़ी में जाने पर तीन मुख्य दरवाजे हैं हर दरवाजे में एक मंजिल बढ़ते क्रम में है तीन दरवाजा के दोनों तरफ कमरे बने हुए इन कमरों में जाने के लिए सीढ़ियां बनाई गई है बावड़ी की तरफ खुलती हुए झरोखे इन कमरों में स्थित है पूरी बावड़ी में अंतिम छोर पर कुआं स्थित है कुआं का तल व बावड़ी का मुख्य दरवाजा एक ही तल पर स्थित है कुएं के ऊपर ऊंची मीनार बनी हुई है इन मिनारो को स्थानीय भाषा में मरवा के नाम से जाना जाता है वर्तमान में कुवै को ऊपर से जाल से ढका हुआ है जिससे कोई दुर्घटना घटित ना हो और बावड़ी में संपर्क के लिए चार जगह से

कुएं बावड़ी को मिलाया गया है लगभग 200 साल पुरानी होने के बावजूद अब भी बावड़ी की स्थिति बहुत अच्छी है बावड़ी के स्थापत्य को देखकर देखने वाले चकित हो जाते हैं बावड़ी में बरसात के समय पहाड़ी से पानी आता था इसके अलावा कुएं के द्वारा भी इस बावड़ी में पानी की आवक होती थी। इस बावड़ी में कुछ सीढ़िओ के बाद एक बड़ा घाट या एक बड़ी सिढ़ि मिलती है । जो पानी के दबाव को नियंत्रित करती है व नीचे उतरने वाले आराम से इस पर खड़े होकर विश्राम कर सकते हैं बावड़ी तीन भागों में विभाजित है हर भाग से पहले एक बड़ा दरवाजा बना हुआ है हर दरवाजे के पास झरोखे बने हुए हैं जिनमें जाने के लिए सीढ़िओ का निर्माण किया गया है यह झरोखे और गवाक्ष बावड़ी की तरफ खुलते हैं । मुख्य दरवाजे के पास बावड़ी 70 फुट चौड़ी है।सामने की दीवार के दूसरी तरफ एक कुआं जिसके 2 कोठे, खेल, चोपड़े, ढ़ाने, दो मीनारे, घडोई, सीढ़ियां और चारों तरफ खुरां। कुएं की नाल बावड़ी की नाल से मिली हुई। बावड़ी का आदमी कुएं, में आ जा सकता है[18]।

इस बावड़ी में राजघरानों की महीलाएं तथा उनके उच्च अधिकारियों और खास–खास नागरिको की महिलाएं स्नान करने आया करती थीं[19]। बहुत वर्षों बाद आम आदमी भी इसमें स्नान करने के लिये आने लगे थे। यह बावड़ी आज भूत बावड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। जिसमें चमगादड़ों का बसेरा, कबूतरों का डेरा है। सम्वत् 1956 में एक बहुत बड़ा कहत (काल) पड़ा वो जो छप्पनियां काल के नाम से मशहुर है। इस काल के जमाने में गरीबों की सहायतार्थ नाजिम हरीनारायणजी ने इसकी मरम्मत करवाई थी। यह बात बहुत लोगों की जुबान से सुनी गई[20]। बावड़ी को पर्यटन विभाग के अंतर्गत देने के बाद यहां पर साफ सफाई करवाई गई है जिससे पर्यटकों ने आना शुरू किया है बावड़ी को जिर्णोद्वार की आवश्यकता है यह बावड़ी अब भी पीने के पानी का अच्छा स्रोत साबित हो सकती है ।इसके अलावा इस बावड़ी में बरसात के पानी का संग्रहण कर उसका दैनिक उपयोग में उपभोग किया जा सकता है।

निष्कर्ष

बावड़ियाँ केवल जल संरक्षण का साधन नहीं थीं, बल्कि वे हमारी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर का भी अभिन्न हिस्सा रही हैं। विशेष रूप से झुंझुनू जिले की मेड़तनी बावड़ी स्थापत्य कला और जल प्रबंधन की दृष्टि से एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यदि इन ऐतिहासिक जल संरचनाओं का संरक्षण और पुनरुद्धार किया जाए, तो ये आने वाली पीढ़ियों के लिए जल संकट समाधान और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संरक्षित रह सकती हैं।

संदर्भ

1.झुंझनवी,हकीम युसूफ ,मेरा झुंझुनूं , प्रकाशक हकीम युसूफ एकेडमी साहित्य मजलिस झुंझुनू 2004 पृ. 4

2.शर्मा, गोपीनाथ ,राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास ,राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर, 2010,पृष्ठ143

3.मिश्र ,अनुपम, राजस्थान की रजत बूंदे,पृष्ठ 5-15

4.जुगनू, श्री कृष्ण, जल एवं भारतीय संस्कृति, आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली पृष्ठ 51

5.वही पृ.52

6.वही पृ.66

7 कुमार रोहिताश एवं निकी चतुर्वेदी, जल संग्रहण के परंपरागत ज्ञान के वाहक: राजस्थान मे झुंझुनू क्षेत्र के कुएं। चेतना, पृष्ठ 54 - 58

8.अमरकोष 1, 10, 28.एवं जुगनू, श्री कृष्ण, जल एवं भारतीय संस्कृति,पृ.90-95

9.जुगनू, श्री कृष्ण, जल एवं भारतीय संस्कृति,पृ.59

10.सिंह,वाई.डी. । राजस्थान के कुएं एवं बावड़िया ,पृ.38-39

11.जुगनू, श्री कृष्ण, जल एवं भारतीय संस्कृति,पृ.53

12.सुजस, जनवरी 1996 ,पृष्ठ10

13.कुमार रोहिताश एवं निकी चतुर्वेदी, जल संग्रहण के परंपरागत ज्ञान के वाहक: राजस्थान मे झुंझुनू क्षेत्र के कुएं। चेतना, पृष्ठ 54 - 58

14.सिंह,वाई.डी. । राजस्थान के कुएं एवं बावड़िया ,पृ.38-39

15. विभिन्न क्षेत्रों में पानी बताने वालों के नाम।

16.सुजस, जनवरी 1996 ,पृष्ठ13

17. झुंझनवी,हकीम युसूफ ,मेरा झुंझुनूं ,पृ.24

18. सर्वेक्षण।

19.झुंझनवी,हकीम युसूफ ,मेरा झुंझुनूं ,पृष्ठ 23-24

20.झुंझनवी,हकीम युसूफ ,मेरा झुंझुनूं ,पृ.24-25